ललित-निबंध

बछड़े के मुख से निकला 'माँ' शब्द

श्रीराम परिहार

'श्रीमद्भागवत' के आरंभ में एक प्रसंग आता है—गाय एवं बैल के एक जोड़े को एक व्यक्ति डंडे से बुरी तरह पीटता जा रहा है। कमल-तंतु के समान श्वेत रंग का वह बैल एक पैर पर खड़ा है और उस दंडधारी व्यक्ति की प्रताड़ना से भयभीत होकर मूत्र-त्याग कर रहा है। धर्मोपयोगी दूध, घी आदि हविष्य पदार्थों को देनेवाली वह गाय भी उस व्यक्ति की बार-बार ठोकरें खाकर अत्यंत दीन हो रही है। एक तो वह दुबली-पतली है, दूसरा उसका बछड़ा उसके पास नहीं है और तीसरे, उसे भूख लगी है। उसकी आँखों से आँसू झर रहे हैं। उधर से राजा परीक्षित् निकलते हैं। वे यह देखकर उस व्यक्ति को ललकारकर कहते हैं, 'अरे! तू कौन है जो बलवान् होकर भी मेरे राज्य के इन निरीह प्राणियों को मार रहा है?'

बात आगे खुलती है—वह बैल धर्म है, गाय पृथ्वी है। वह कुप्रवृत्तियों का धारक व्यक्ति कलियुग है। यह प्रसंग द्वापर के अंत और कलियुग के आरंभ का है। राजा परीक्षित् की ललकार से वह व्यक्ति शरण में आ जाता है। वह धर्म और पृथ्वी को प्रताड़ित करना बंद कर देता है। राजा उसे (कलियुग) द्यूत, मद्यपान, स्त्री-संसर्ग और हिंसा में बसने के लिए स्थान दे देते हैं। बाद में एक स्थान में और स्वर्ग (धन) में बसने की भी उसे अनुमति दे देते हैं।

लगता है, तब तो गाय की दु:ख-गाथा राजा की ललकार से खत्म हो गई थी; लेकिन वह व्यक्ति दुष्ट प्रवृत्ति के रूप में बार-बार जिंदा होकर आज भी गाय को प्रताड़ित कर रहा है, उसका वध कर रहा है।

परंतु एक सवाल बार-बार उठता है—हिंसा गाय की ही क्यों निषिद्ध है? जबकि प्राणिमात्र के कल्याण और रक्षा की बात मानव धर्म कहता है। कहा भी गया है—'धर्मो रक्षति रक्षित:।' धर्म रक्षित होने पर रक्षा करता है। सबके सुख की कामना करते हुए अपने कार्य का विस्तार और अनुशासन इस तरह से करता है कि धर्म की मूल भावना की रक्षा हो सके। फिर सर्वाधिक बल गाय की रक्षा पर क्यों है?

इस सवाल के अनेक जवाब हैं। गाय का पंचगव्य—दूध, दही, घी, मूत्र और गोबर—सभी अत्यंत उपयोगी और रोगनाशक हैं। भारत खेतिहर देश है। कृषि कार्य के सारे अंग गाय से जुड़े हैं। कृषि का सारा भूगोल गाय पर आश्रित है। कृषि का सारा अर्थशास्त्र गाय पर निर्भर है। कृषि का सारा धर्मशास्त्र गाय संदर्भित है। इसलिए भारतीय जीवन की सारी दिनचर्या, सारी क्रियाएँ और सारे अनुष्ठान गाय से जुड़े हुए हैं। घर में बननेवाली पहली रोटी गाय के नाम की बनती है। जन्म के समय गोबर के तिलक से लेकर मृत्यु के समय गोदान तक के हजार-हजार संदर्भ भारतीय जीवन में रेशा-रेशा फैले हैं। पता नहीं कितना सच और कितना अनुमान है—परंतु कहा यह भी जाता है कि गाय ही मरणोपरांत वैतरणी पार कराती है। कुल मिलाकर गाय भारतीय जीवन के व्यापक प्रभावों के केंद्र में है, स्वावलंबन की धुरी है, संपन्नता की सूचक है, भारतीय 'होरी' के जीवन की अंतिम अभिलाषा है।

ये निष्कर्ष एक दिन के नहीं हैं। मानव सभ्यता के विकास में वह दिन सबसे महत्त्वपूर्ण है, जिस दिन सृष्टि के उस पहले मानव के मन में विचार आया कि पशुओं को मारने के बजाय पालकर रखना अधिक उत्तम है। यह विचार ही अहिंसा का आदिम स्थल है। उसी दिन से हिंसा की नदी सूखने लगी। पर कहाँ सूखी है? पशुओं को पालने के लिए मनुष्य ने अनेक प्रकार के पशुओं को घेरना, बाँधना, कोंडना शुरू किया होगा। उनकी क्रियाओं और आदतों का अध्ययन किया होगा। वर्षों की इस प्रक्रिया के बाद उसने पाया होगा कि गाय ही सब में सीधा प्राणी है, दुधारू है। उसका प्रत्येक भाग जीवित रहते और मरणोपरांत काम का है। वह गाय से इतना और इस कदर जुड़ा कि जीवन के सारे अनुष्ठान और संस्कार उससे संपन्न होने लगे। गाय भारतीय जीवन के एक तरह से केंद्र में आ गई।

उसे अनुभव हुआ कि गाय इतनी सीधी है कि उसका संपूर्ण जीवन त्याग और सहजता का अध्याय है; जो सहज है, सीधी है, अमृत समान दुग्धमयी और दुग्धदायी है, पालक है। वह पशु नहीं है, माता है। मानव ने अनुभव किया कि गाय पशु नहीं है, जानवर नहीं है। गाय तिल-धान्य नहीं है। गाय माता है, ज्ञान-विज्ञान है। गाय अर्थशास्त्र है। गाय समाजशास्त्र है। गाय धर्मशास्त्र है। गाय आयुर्वेद है। गाय संस्कृति का मूल है। गाय कृषि का आधार है। गाय पर्यावरण है। गाय महालक्ष्मी है। गाय हमारा सर्वस्व है। गाय चलता-फिरता चिकित्सालय है। गाय ऊर्जा का केंद्र है। गाय का दूध पीकर हमारे भीतर मानव के गुण आते हैं। माँ का दूध पीने पर भी मनुष्य के गुण आते हैं। माँ का दूध हलके पीले रंग का होता है। माँ के दूध में पीलापन विज्ञान के अनुसार कैरोटिन के कारण होता है। गाय की रीढ़ की हड्डी में सूर्यकेतु नाड़ी होती है। सूर्य के प्रकाश में जब गाय रहती है, तब सूर्यकेतु नाड़ी जाग्रत् होकर सक्रिय हो जाती है, जिसके कारण सूर्य के प्रकाश को तेजी से अपनी ओर खींचती है। जिससे सूर्य के प्रकाश

और सूर्यकेतु नाड़ी में घर्षण होता है, जिससे कैरोटिन (स्वर्ण क्षार) उत्पन्न होता है। माँ का दूध और गाय का दूध समान होता है। गौ माता है।

'माँ' शब्द को प्रतिष्ठा गाय के बछड़े से ही मिली है। शेर का बच्चा पैदा होते दहाड़ता होगा। घोड़े का बच्चा शायद हिनहिनाता होगा। बकरी का बच्चा मिमियाता है। मनुष्य का बच्चा जनमते ही रोता है। प्राय: सभी प्राणियों के बच्चे जन्म लेते ही या थोड़े दिनों के बाद अलग-अलग तरह की आवाजों में अलग-अलग संबोधन या ध्वनियाँ निकालते हैं; लेकिन जब गाय का बच्चा जन्म लेता है तो सबसे पहले पुकारता है—'माँ'। 'माँ' संबोधन अपनी जननी के लिए मनुष्य ने गाय से ही सीखा है।

गाय का दूध पूरी तरह से सात्त्विक, पौष्टिक, सुपाच्य, संपूर्ण आहार है। गाय के दूध में तीन हजार से अधिक दिव्य रसायन मौजूद हैं। गाय का दूध मानव शरीर के साथ-साथ मस्तिष्क के विकास में रामबाण ओषधि का काम करता है। गाय के दूध के नियमित सेवन से मनुष्य के अंदर सेवा, परोपकार, दूरदर्शिता, परिश्रम, दृढ़ निश्चय, साहस, पराक्रम, शौर्य, पौरुष जैसे गुणों का विकास होता है। गाय का दूध पीने से राक्षसी प्रवृत्तियाँ समाप्त होती हैं। राक्षस से पशु, पशु से मानव, मानव से देव मानव और देव मानव से दिव्य मानव तक की विकास यात्रा गाय के दूध पीने से होती है।

इस समय दुनिया बहुत बीमार रहती है। जोड़-जोड़ में दर्द है। दुनिया कब बीमार नहीं रही? दुनिया की बीमारी के लिए गौ पंचगव्य से कामधेनु गौनीर, कामधेनु दंत मंजन, कामधेनु जीवन कल्पतरु, कामधेनु आरोग्य वटी, कामधेनु गोमय धूप, गुरुकुल पेय, मधुमेह-नाशक योग, कामधेनु एड़ी मल्हम, कामधेनु कुमारी अर्क, कामधेनु आवस आदि अनेक ओषधियाँ बनाई जा रही हैं।

मेरा मन रह-रहकर पूर्वोक्त वृत्तांत के साथ उल्हासनगर (मुंबई) स्थित राधेश्याम गौशाला की ओर उड़ना चाहता है। देश-विदेश में कई गौशालाएँ इसीलिए बनाई गईं कि गाय की रक्षा से जीवन की रक्षा जुड़ी हुई है। राधेश्याम गौशाला उल्हासनगर में गौधन के दर्शन कर धन्य हो गया। इतनी ऊँची-पूरी, हृष्ट-पुष्ट और इतनी संख्या में गायें मैंने किसी गौशाला में नहीं देखी थीं। अपने गाँव की गौ-नार में तो संख्या इससे तिगुनी-चौगुनी देखी है, पर ऐसी सुंदर गायें नहीं हैं उसमें। सुना है, बाबा नंद की नौ लाख गायें थीं। रही होंगी। गोपाल उनके चरैया और रखवाले जो रहे हैं। निमाड़ के संत सिंगाजी के पास पाँच सौ गायें थीं।

मैं कल्पना के पंखों से वहाँ चला जा रहा हूँ जहाँ ऋषि का आश्रम है। आश्रम के पास नदी है, बगीचा है, यज्ञ वेदी है। आश्रम के द्वार पर गाय बँधी है। ऋषि अपने शिष्यों को बता रहे हैं, 'तीर्थस्नान, ब्राह्मणभोज, हरिदर्शन, महादान, व्रत, उपवास, सत्य भाषण, महायज्ञ आदि से जो पुण्य प्राप्त होता है वह केवल गौसेवा से प्राप्त हो जाता है।' ऋषि आगे कहते हैं, 'गौमाता का श्रद्धापूर्वक स्पर्श करने से मनुष्य पापमुक्त हो जाता है।' (स्कंदपुराण) ऋषि और आगे जानकारी देते हैं, 'गौ की परिक्रमा करने से मनुष्य के सारे पाप छूट जाते हैं। वह स्वर्ग को प्राप्त करता है। गौ की परिक्रमा करने के कारण ही बृहस्पति सबके वंदनीय, माधव सबके पूज्य और इंद्र ऐश्वर्यवान् हो गए।' (पद्मपुराण) ऋषि बिना रुके कह रहे हैं, 'गौदान करने से मनुष्य अपनी सात पीढ़ी पहले के पितरों और सात पीढ़ी बाद की संतान का उद्धार करता है।' (महाभारत, अनुशासनपर्व) ऋषि देववाणी में कहते हैं, 'गोष्ठे तु सर्व मन्त्राणां जपं निश्चित सिद्धिम्।' गौशाला में सभी प्रकार के मंत्रों का जाप करने से वे सिद्ध हो जाते हैं। ऋषि इसी आधार पर कहते हैं, 'गावो विश्वस्य मातर:।' गाय विश्व की माता है। गौसेवा ही राष्ट्रसेवा है। गौरक्षा राष्ट्ररक्षा है।

ऋषि यह सब अपने शिष्यों को प्रबोध रहे थे कि मैं उनके आश्रम की बागड़ तोड़ता हुआ सीधे प्राश्निक मुद्रा में मूढ़मते सा उवाचता हूँ—'आप क्या राष्ट्ररक्षा की बात करते हैं! मेरे राष्ट्र में रोज सैकड़ों गायों की हत्या होती है। घास-फूस की तरह गाय-बैलों को चरखी में काटा जा रहा है। निरीह प्राणी कुछ बोल नहीं पाते, लेकिन उनकी आँखों से करुणा टपकती है। उन्होंने मनुष्यों का कुछ नहीं बिगाड़ा। उन्होंने कसाइयों के बापों को नहीं मारा। परंतु कसाइयों द्वारा गायों का वध हो रहा है। गौवंश की हत्या हो रही है। हत्या चाहे कसाई कर रहे हों, परंतु गायों को, गौवंश को कसाइयों को बेचने का काम तो गाय पालनेवाले ही कर रहे हैं। ये वे लोग हैं जो जीवन भर गाय का दूध-दही-घी-मूत्र-गोबर (खाद) खाते हैं और बूढ़ी होने पर कसाई को बेच देते हैं। जीवन भर बैलों से काम लेते हैं और बूढ़े होने पर कसाई को गेर देते हैं। मासूम बछड़ों को पत्थर-हाथों को सौंपते हैं। असली हत्यारे तो वे हैं जो गायों को कसाई को बेच देते हैं। देश-धर्म का यह कैसा नाता है? फिर गाय हमारी कैसी माता है? माँ को कोई बेचता है क्या?'

ऋषि का मुखमंडल शांत है। वे न उत्तेजित हैं, न विचलित, न उद्वेलित, न आक्रोशित। उनकी वाणी फूटती है—जैसे किसी गहन गुफा से अनहद फूट रहा हो—'मनुष्य एक स्वार्थी प्राणी है।' 'वत्स! शांत हो जाओ। हो सके तो गाय पाल लो। अब राजा परीक्षित् सरीखे राजा नहीं रहे। अब प्रजातंत्र में सारा काम प्रजा को ही करना है। प्रजा ही जब गाय को एक तरफ माता कहे और दूसरी तरफ उसे वध हेतु कसाई को बेचे, तो उस प्रजा का देश-धर्म से कोई नाता नहीं रह जाता। सब स्वारथ की प्रीत है। स्वारथ सधा, प्रीत खत्म। इसलिए अपने दु:ख को सेवा में बदल दो। गाय पालो और उसकी सेवा करो। दुनिया को अपने रास्ते जाने दो, तुम धर्म के मार्ग पर चलो। धर्म वह जो प्राणिमात्र की हिंसा का निषेध करता हो। अहिंसा ही परम धर्म है। गाय की ही नहीं, जीवमात्र की हिंसा पाप है।'

हमारे यहाँ ईश्वर के अवतार लेने के कारणों में बार-बार उल्लेख आता है कि भूमि का भार उतारने के लिए ईश्वर ने अवतार लिया। गौ, द्विज, सुर, संत-हित के लिए प्रभु अवतरित हुए। इसे प्रतीक रूप में कह सकते हैं कि परमात्मा इस पृथ्वी पर सरलता और सिधाई को बचाने के लिए नाना रूप धारण करते हैं। पृथ्वी का भार उतारने का अर्थ है कि दुष्प्रवृत्तिवाले व्यक्तियों के कारण समाज व्याकुल हो उठता है। मानव समाज में ही नीति-धर्म नहीं रहेगा तो सारे प्राणियों के प्रति रक्षा और दया

अपने आप समाप्त हो जाएगी। ऐसा होने पर यह धरती गलत वस्तुओं और प्रवृत्तियों को धारण करने से बेचैन हो उठती है। इसलिए सहजता को बचाना सृष्टि के हित में आवश्यक है। ब्रह्मांड के सारे प्राणियों में सर्वाधिक उपयोगी और सीधा जीव गाय है, इसलिए गाय की रक्षा सृष्टि में स्थित सिधाई की रक्षा है।

प्रसंगों के संदर्भ खुलने लगते हैं। समझ में आता है कि गोस्वामीजी ने सीताजी की सिधाई और पवित्रता के लिए ही रावण द्वारा हरण करके ले जाते समय यह रूपक दिया—'जिमि म्लेच्छ ले कपिला गाई।' गौ की सेवा और उसके प्रति निस्स्वार्थता का भाव वसिष्ठ और उनकी नंदिनी गाय के रूप में प्रकट हो जाता है। जमदग्नि ऋषि द्वारा सेवा सहित सहस्रबाहु को निमंत्रित करने और छोटी सी कुटिया से इच्छा-तृप्ति भोजन कराकर विदा देने के आश्चर्य में कामधेनु के कारण संपन्नता चित्रित हो उठती है। समुद्र-मंथन से निकली कामधेनु का देवों ने तो महत्त्व जाना, बाद में इस धरती के ऋषि और मानव ने भी जाना-समझा। लेकिन इस यंत्र युग के बीच स्वार्थ की झाड़ियों में भटके मनुष्य ने धरती के समान सबकुछ सह लेनेवाली और निरंतर संपदा प्रदान करनेवाली मूक सिधाई (गाय) का वध करके अपने ही कर्म को लांछित किया है। आज गाय संकट में है। प्रकारांतर से भारतीय कृषि संकट में है। गाय करुणा की मूर्ति बन गई है। वह विवश घसीटती हुई ले जाई जा रही है। धर्म बैल की मुद्रा में एक ही पाँव पर फिर खड़ा हुआ है। उसके तीनों पाँव—तप, पवित्रता और दया—टूट चुके हैं। केवल एक पाँव—सत्य—बचा है। क्या व्यक्ति के भीतर का परीक्षित् प्रकट होगा? धर्म और पृथ्वी के रक्षार्थ कुछ तो करना होगा; क्योंकि गाय में माँ की सिधाई, ममत्व, त्याग, पवित्रता, तप, दया और सत्य साक्षात् हैं। गौ विश्व की माता है। ☐

लेकिन इस यंत्र युग के बीच स्वार्थ की झाड़ियों में भटके मनुष्य ने धरती के समान सबकुछ सह लेनेवाली और निरंतर संपदा प्रदान करनेवाली मूक सिधाई (गाय) का वध करके अपने ही कर्म को लांछित किया है। आज गाय संकट में है। प्रकारांतर से भारतीय कृषि संकट में है। गाय करुणा की मूर्ति बन गई है। वह विवश घसीटती हुई ले जाई जा रही है।

आजाद नगर,
खंडवा-४५०००१

साहित्य अमृत

भारत सरकार (गृह मंत्रालय) के राजभाषा विभाग के
पत्रांक ११०१४/८/९६-रा.भा. (प) द्वारा
केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/
सार्वजनिक उपक्रमों/बैंकों/स्वायत्त निकायों/संस्थाओं आदि के लिए

एक विशिष्ट मासिक साहित्यिक पत्रिका के रूप में अनुशंसित एवं अनुमोदित।

एक प्रति का शुल्क : पंद्रह रुपए
एक वर्ष का शुल्क : दो सौ रुपए

शुल्क मनीऑर्डर अथवा बैंक-ड्राफ्ट द्वारा 'साहित्य अमृत' के नाम
४/१९ आसफ अली रोड, नई दिल्ली-११०००२ के पते पर भेजा जा सकता है।

राजभाषा हिंदी तथा सत्साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए संस्थाओं का सहयोग अपेक्षित है।